छत्तीसगढ़ के जशपुर तहसील में कृषि विकास का स्तर : एक भौगोलिक विश्लेषण

Dr. SMT. SUSHILA EKKA

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या के जीविकोपार्जन का प्रमुख आधार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कृषि ही है, कृषि संबंधी शोधकार्य का महत्व दिनोदिन बढ़ता जा रहा है क्योंकि कृषि के विकास किये बिना भारत की एक विशाल जनसंख्या का जीवन स्तर ऊपर उठाना कठिन है, देश की लगभग 46 प्रतिशत और मध्यप्रदेश की 57 प्रतिशत आय कृषि से प्राप्त होती है। देश की उन्नति कृषि के विकास से ही संभव है वर्तमान में बढ़ती जनसंख्या के लिये खाद्यानों की माँग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, जिससे कृषि भूमि पर दबाव निरंतर बढ़ता जा रहा है और कृषि भूमि की अतिरिक्त पूर्ति एक समस्या है अतः कृषि उत्पादन में वृद्धि आवश्यक है जो उसके विकास से ही संभव है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय–जशपुर तहसील छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित बिलासपुर संभाग के अंतर्गत जशपुर जिले में स्थित है। यह छत्तीसगढ़ बेसिन (धान का कटोरा) का एक हिस्सा है। इसका अक्षांशीय विस्तार 22^{0}30 से 23^{0}15 उत्तरी अक्षांश तथा 83^{0}23 से 84^{0}24 पूर्वी देशांतर के मध्य 1246 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर है (मानचित्र क्रं॰ 1) तहसील के उत्तरी भाग में मनोरा से होकर कर्क रेखा गुजरती है। इस तहसील के उत्तरी भाग में सामरी तहसील पश्चिम में बगीचा तहसील, स्थित है। जशपुर तहसील में 33 पटवारी हल्के हैं जिसमें जशपुर विकासखंड में 17 एवं मनोरा विकासखंड में 16 पटवारी हल्के हैं। जशपुर तहसील में कुल 193 आबाद ग्राम एवं 02 वन ग्रम हैं।

आँकड़ों के स्त्रोत एवं विश्लेषण विधियाँ–प्रस्तुत शोध प्रबंध में अध्ययन की इकाई हेतु तहसील के दोनों विकासखंडों (जशपुर तथा मनोरा) के 33 पटवारी हल्कों (जशपुर 17 तथा मनोरा 16) को आधार माना गया है। इस अध्ययन हेतु अधिकांश आँकड़े राजस्व निरीक्षक मण्डल विकासखंड मुख्यालय तथा तहसील व भू–अभिलेख कार्यालय से प्राप्त किये गये हैं तथा विकास संबंधी कुछ आँकडे विकासखंडवार में गणना किये गये हैं। इस अध्ययन में ज्यादातर राजस्व संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण त्रिवर्षीय (2004.05 से 2007.08) औसत के आधार पर किया गया है। जनसंख्या संबंधी आँकड़े जनगणना 2001 के आधार पर किया गया है। इसके अलावा विभिन्न प्रकाशित एवं अप्रकाशित प्रतिवेदन, सेन्सस रिपोर्ट, जिला गजेटियर, एवं कृषि ऋतु फसल प्रतिवेदन, कृषि सांख्यकीय सारिणी से भी आँकड़े प्राप्त किये गये हैं।

तहसील में कृषि विकास स्तर तथा इससे संबंधित विभिन्न तथ्यों के अध्ययन को अधिकाधिक विश्ले णात्मक और तथ्यपरक बनाने के लिये अनेक मात्रात्मक तकनीकों में प्रतिशत, औसत, अनुपात, घनत्व, दर को आधार बनाया गया है। इनसे न केवल उनके वितरण प्रतिरूप स्पष्ट होते हैं बल्कि तुलनात्मक क्षेत्रीय अंतर भी स्पष्ट होती है इस शोध प्रबंध में धरातलीय मानचित्रों, आरेखों, बिन्दु विधि का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया गया है।

कृषि विकास की संकल्पना–ृषि का वर्तमान स्वरूप कई घटकों का योग है। इन घटकों में वैयक्यिक गुणों तथा सामाजिक कारणों से लेकर आर्थिक एवं प्राकृतिक दशायें आती हैं। इनमें प्राक तिक कारकों संबंधी नियम नहीं बनाये जा सके हैं। केवल उसकी अनिश्चितता के विश्ले ाण के लिये खेल सिद्धांत (ळंउम जीमवतल) के उपयोग को प्रस्तावित किया गया है। कृषि की मनोव त्ति एवं उसके वैयक्तिक गुणों के प्रभाव के विश्लेषण के लिये आत्म संतुष्टि प्रतिमानों का उपयोग होने लगा है। इन्हीं पर आधारित अभिज्ञानों के प्रेरण का सिद्धांत है। इसके विपरीत कृषि को एक आर्थिक क्रिया के रूप में मानकर उसकी समस्त प्रक्रियाओं के विश्लेषण के लिये अर्थशास्त्र के नियमों एवं सिद्धांतो का प्रयोग किया जाता है।

भूगोल की सामान्य संकल्पनाओं के साथ ही कृषि भूगोल में विकास की संकल्पना का विकास हुआ है जिसे कृषि विकास स्तर के रूप में भी अध्ययन किया जाता है। कृषि में विकास स्तर की संकल्पना को विकसित करने में मो॰शफी, जसवीर सिंह, आंध्र भूगोलविद् प्रो॰ए॰ क भणा कुमारी तथा ई॰ स्वामीनाथन (अनंतपुर) श्री कमल शर्मा (सागर, मध्यप्रदेश) का महत्वपूर्ण योगदान है। इन सबसे अध्ययनों में यह बात उभरकर आयी है कि कृषि विकास का तात्पर्य केवल कृषि के क्षेत्र में नये तकनीकी ज्ञान और सेवाओं तथा निवेशों को क भाकों के बीच प्रचार–प्रसार और उनका अपनाया जाना ही नहीं है बल्कि कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ कृषि के संपूर्ण अंगों के विकास से संबंधित है। कृषि विकास स्तर के लिये चयनित चरों में न केवल उत्पादन संबंधी दशाओं को नापने वाले चरों को आधार बनाया गया है। बल्कि कृषि उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारकों को भी चरों के रूप में सम्मिलित किया गया है ताकि कृषि नियोजन में इससे सहायता मिल सके, क्योंकि कृषि विकास के नियोजन में केवल निवेशों की पूर्ति में व द्धि अथवा फसलों की उत्पादकता में व द्धि का ही लक्ष्य नहीं होना चाहिये वरन् कृषि उपयोग का संतुलित, विविध प्रकार के उपयोग और अधिक लाभप्रद का दृष्टिकोण भी होना चाहिये। इस तरह कृषि विकास स्तर का अध्ययन कृषि नियोजन में महत्वपूर्ण होता है।

कृषि विकास को प्रभावित करने वाले कारक–कृषि विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है –

1. बाह्य कारक–इसके अन्तर्गत भौतिक व प्राकृतिक कारक जैसे – धरातलीय संरंचना, मिट्टियाँ, तापमान, वर्मा मौसम आदि एवं अन्य बाहयकारकों में जैसे–कृषि का स्थानीयकरण, परिवहन के साधन, बाजार की परिस्थितियाँ कृषि उत्पादन की कीमतें माँग–पूर्ति व कृषि साख आदि कारक कृषि विकास को प्रभावित करती है।

2. आंतरिक कारक–इसके अन्तर्गत कृषि की सामाजिक और स्वामित्व संबंधी दशायें कृषि की तकनीकी एवं संगठनात्मक दशायें जैसे–सिंचाई, उर्वरकों की पूर्ति, श्रम, पशुशक्ति व यांत्रिक शक्ति निवेश आदि कृषि की उत्पादन एवं संरचात्मक दशायें जैसे–कृषि उत्पादकता श्रम उत्पादकता, भू–वहन क्षमता, शस्य गहनता आदि सम्मिलित है। तहसील में कृषि विकास स्तर के निर्धारण हेतु कृषि की आंतरिक विशेषताओं के आधार पर निम्नलिखित सूचकांको को चुना गया हैः–

1. निरा बोया गया क्षेत्र 2. सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत 3. शस्य गहनता 4. विपुल उत्पादक बीजों का उपयोग 5. रासायनिक उर्वरकों का उपयोग 6. कृषि उत्पादकता 7. दोफसली क्षेत्र 8. जोत का औसत आकार (हे॰मे॰) 9. पशुधन संख्या तहसील में कृषि विकास स्तर

ASST. PROFESSOR (GEOGRAPHY) GOVT. GIRLS P.G. COLLEGE BILASPUR

तालिका 1

जशपुर तहसील : कृषि विकास के लिये चयनित चरों का रैंक स्कोर

पटवारी ह.नं.	निरा बोया गया क्षेत्र	सिंचित क्षेत्रफल	दोफसली क्षेत्र	विपुल उत्पादकता बीजों का उपयोग	रासायनिक उर्वरकों का उपयोग	जोत का औसत आकार	पशुधन संख्या	शस्य गहनता	कृषि उत्पादकता	कुल रैंक स्कोर
1	22	32	4	2	31	6	5	11	16	107
2	21	15	7	8	13	2	15	14	10	115
3	9	31	18	20	32	14	11	20	13	168
4	6	28	1	3	29	1	4	8	7	87
5	14	26	8	7	27	8	20	15	8	133
6	13	22	16	22	26	24	39	19	21	194
7	28	17	2	5	15	3	16	9	11	105
8	29	16	3	1	17	4	21	10	6	107
9	23	21	13	11	25	13	12	23	20	161
10	7	11	5	6	14	9	6	12	12	82
11	30	29	12	14	30	15	32	17	30	209
12	8	30	15	16	28	17	10	22	14	160
13	5	33	14	18	33	19	24	18	29	193
14	20	19	17	13	6	7	28	24	3	137
15	15	5	6	4	1	5	17	13	1	67
16	12	2	9	10	3	12	7	16	2	73
17	27	7	33	33	5	23	33	6	33	201
18	24	10	22	24	9	21	29	25	19	184
19	31	14	23	26	12	22	13	26	23	189
20	32	25	29	28	23	28	23	30	26	244
21	2	3	11	9	7	10	22	33	4	99
22	1	20	30	32	18	33	14	31	31	210
23	16	27	32	31	24	32	31	4	22	218
24	17	23	27	30	22	31	18	5	28	201
25	4	1	10	12	4	15	3	7	5	71
26	33	12	28	25	10	27	27	3	27	192
27	19	13	26	23	21	25	19	31	32	209
28	26	6	21	19	8	20	30	27	15	172
29	25	24	20	17	20	16	8	28	17	175
30	3	9	24	21	11	18	1	29	25	141
31	11	18	31	29	19	26	25	1	24	184
32	10	16	25	27	16	29	9	2	18	172
33	18	4	19	15	2	11	2	21	9	101
योग	**5059**									

स्रोत – अध्येता की गणना पर आधारित (2004.05 से 2007.08)

के निर्धारण हेतु विभिन्न प्रकार के चरों का चुनाव कृषि की आंतरिक विशे ताओं के आधार पर किया गया है जिसमें सामान्यतः विकास के कारकों पर ही अधिक बल दिया जाता है जिससे कृषि विकास का परिकलन उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर संयुक्त रैंक स्कोर विधि से किया गया है। प्रारंभ में तहसील के 33 पटवारी हल्कों के लिये 9 कारकों के चयन के पश्चात् प्रत्येक कारकों की गणना अवरोही क्रम मे 1 से 33 रैंक या कोटि क्रम देकर किया गया है। सभी कारकों की कोटियों को जोड़कर ''संयुक्त कोटि योग'' (संयुक्त रैंक स्कोर) ज्ञात किया गया है। जो मूलतः कृषि विकास का सूचक है। कुल कोटि योग और कृषि विकास स्तर के बीच विपरीत संबंध पाया जाता है। जैसा कि अधिक कोटि योग निम्न कृषि विकास स्तर को तथा निम्न कोटि योग उच्च कृषि विकास स्तर को स्पष्ट करता है। चयनित चरों के कोटि योग को तालिका 1 तथा पटवारी हल्कों के कुल रैंक आर्डर स्कोर को तालिका क्रं॰ 2 में व्यक्त किया गया हैः—

तालिका क्रं॰ 2

जशपुर तहसील : पटवारी हल्कों के कुल रैंक आर्डर स्कोर का वितरण प्रतिरूप

कुल रैंक स्कोर	हल्कों की संख्या	पटवारी हल्के
50.100	6	4,10,15,16,21,25
100.1—150	8	1,2,5,7,8,14,30,33
150.1—200	12	3,6,9,12,13,18,19, 26,28,29,31,32
200.1—250	7	11,17,20,22,23,24,27

सामान्यतः यह देखा जाता है कि समय के साथ कृषि विकास के स्तर में भी परिवर्तन होते रहता है वैसे — एक निम्न कृषि विकास स्तर प्रदेश में सिंचाई उर्वरक, उन्नत बीजों के प्रयोग एवं यांत्रिक शक्तियों के अधिकाधिक प्रयोग से वह उच्च कृषि विकास स्तर क्षेत्र में परिवर्तन हो जाता है इस तरह वह भू—भाग का स्थायी लक्षण नहीं है यह मात्र उसकी स्थिति को स्पष्ट करती है। तहसील के 33 पटवारी हल्कों में कृषि विकास का स्तर कुल रैंक स्कोर के आधार पर किया गया है। इसके पश्चात् सूचकांक वितरण के आधार पर कृषि विकास स्तर प्रदेशों का विभाजन किया गया है जो तालिका 3 तथा मानचित्र से स्पष्ट है।

तालिका क्रं॰ 3

जशपुर तहसीलः कृषि विकास स्तर सूचक

वर्ग/स्तर	कृषि विकास	कोटि आर्डर स्कोर	पटवारी हल्कों की संख्या
1.	उच्च कृषि विकास स्तर क्षेत्र	<99	5
2.	उच्च मध्यम कृषि विकास स्तर क्षेत्र	99.144	9
3.	निम्न—मध्यम कृषि विकास स्तर क्षेत्र	144.186	8
4.	निम्न कृषि विकास स्तर क्षेत्र	>186	11

जशपुर तहसील के कृषि विकास के स्तर का क्षेत्रीय वितरण

1.**उच्च कृषि विकास स्तर क्षेत्र (<99 स्कोर)**—इस तहसील के अंतर्गत 5 पटवारी हल्के जिनका रैंक आर्डर स्कोर 99 से कम है। इस श्रेणी में सम्मिलित है जिनका हल्का क्रमांक 4ए10ए15ए16 तथा 25 हैं ये क्षेत्र तहसील के मध्य—उत्तरी भाग में मैदानी क्षेत्र में विस्तृत है जो ज्यादातर तहसील के सघन आबाद क्षेत्रों के अंतर्गत आते हैं। यहाँ धरातल सामान्यतः समुद्र सतह से 500 मीटर से कम ऊँचा है और डोरसा मिट्‌टी का विस्तार तुलनात्मक रूप से अधिक है। यहाँ दोफसली क्षेत्र, उन्नत बीज तथा रासायनिक उर्वरकों का उपयोग सामान्य से अधिक तथा जोत का औसत आकार भी उच्च है निरा सिंचित क्षेत्र भी 40 प्रतिशत से अधिक है जो तहसील में उच्च है, जिसके कारण उन्नत बीजों और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग मध्यम से उच्च है तथा शस्य गहनता भी 150 प्रतिशत से अधिक है। इस तरह इन अनेक कारकों के परिणामस्वरूप इन पटवारी हल्कों में कृषि विकास यहाँ की दृष्टि से उच्च स्तर पर है।

2. **उच्च मध्यम कृषि विकास स्तर क्षेत्र (99.144—** तहसील में उच्च—मध्यम कृषि विकास स्तर क्षेत्र के अंतर्गत 8 पटवारी हल्का क्रमांक (107 रैंक स्कोर), 2 (107 रैंक स्कोर), 3 (115), 5(133), 7(107), 14(137)ए 30(141) तथा पटवारी हल्का क्रमांक 33(101) शामिल हैं। इसमें से आधा पटवारी हल्के दक्षिणी—पूर्वी पठार भाग के अंतर्गत आते हैं। इन भागों में निरा सिंचित क्षेत्र मध्यम से निम्न स्तर (10 से 20 प्रतिशत) का है जिसके कारण दोफसली क्षेत्र का अनुपात भी अधिकांश में 5 प्रतिशत से कम है केवल पटवारी हल्का 14 (08 प्रतिशत), 30 (10 प्रतिशत) तथा हल्का क्रमांक 33 (12 प्रतिशत) में कुछ अधिक दोफसली क्षेत्र अनुपात है जिसके फलस्वरूप रासायनिक उर्वरकों का उपयोग उच्च व उन्नत बीजों का उपयोग मध्यम (8 कि॰ग्रा॰/हेक्टयेर) है। यहाँ कृषि उत्पादकता 850 कि॰ग्रा॰ से 1000 कि॰ग्रा॰ प्रति हेक्टेयर के बीच है। कृषि संबंधी अन्य नवाचारों, जैसे ट्रेक्टर पंप सेट्‌स इत्यादि का निवेश भी यहाँ निम्न स्तर का है। मध्यवर्ती क्षेत्रों में ट्रेक्टरों की संख्या कुछ अधिक है। लेकिन दक्षिणी पहाड़ी तथा पठारी भागों में ट्रेक्टरों की संख्या बहुत कम है। इस तरह देखा जाय तो जोत का औसत आकार, पशुधन, संख्या शस्य गहनता, कृषि उत्पादकता इत्यादि मध्यम से उच्च स्तर के हैं फलस्वरूप तहसील के इन क्षेत्रों में कृषि विकास का स्तर उच्च से मध्यम है। कृषि उत्पादन पर संभवतः सबसे अधिक प्रभाव जोत के आकार का पड़ता है और वहाँ के अधिकांश क्षेत्रों का जोत के आधार पर लघु से सीमांत की श्रेणी है।

3. **निम्न—मध्यम कृषि विकास स्तर क्षेत्र—(144.186)**—इसके अंतर्गत तहसील के एक तिहाई से अधिक (12) पटवारी हल्के शामिल हैं। जहाँ कुल रैंक आर्डर स्कोर (144 से 186) के बीच पाई जाती है। इनमें से अधिकांश जशपुर विकासखंड के पश्चिमी तथा मध्यवर्ती क्षेत्रों में स्थित है। यहाँ दोफसली भूमि का सबसे अधिक विस्तार पटवारी हल्का नं॰ 18 में है जहाँ निरा बोये गये क्षेत्र का 6.03 प्रतिशत है, पटवारी हल्का नं॰ 31 दूसरे नंबर पर (5ण्16 प्रतिशत) है इसके बाद क्रमशः हल्का नंबर 29 (5.07 प्रतिशत) तथा 28 (4.96 प्रतिशत) है। इन पटवारी हल्कों में उन्नत बीज तथा उर्वरक उपयोग मध्यम से निम्न है क्योंकि कृषि जोतों का छोटा आकार व उनका बिखराव तथा उनके वितरण केन्द्रों की कमी, भूमि क्षरण की समस्या आदि महत्वपूर्ण कारक हैं। निरा बोये गये क्षेत्र के 3